हमारा परमेश्वर प्रेमी है

''हमारा परमेश्वर सदाचारी है'' पाठ में हमने सीखा था कि पवित्रता परमेश्वर का सर्वश्रेष्ठ, मुख्य गुण है और हमें भी वैसे ही पवित्र बनने के लिए बुलाया गया है जैसे वह पवित्र है। परमेश्वर के सभी गुणों की तरह, यह गुण भी उसके ईश्वरीय स्वभाव की विशेषता है। इसे परमेश्वर से अलग होकर नहीं पाया जा सकता। यह हम पर उसके सभी प्रदर्शनों का आधार है। सदाचारी रूप में कार्य करने का यह उसका स्वभाव है क्योंकि वह पवित्र है।

परमेश्वर का एक और गुण प्रेम है। पवित्रता की तरह, प्रेम भी पूर्ण रूप से केवल परमेश्वर में ही दिखाई देता है। प्रेम करना परमेश्वर के स्वभाव का ऐसा भाग है कि हम पढ़ते हैं, ''परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:8)।

उसके प्रेम का वर्णन

परमेश्वर के सिद्ध प्रेम की बात करना मनुष्यों के लिए कठिन है। हमारे लिए *किसी* सम्पूर्ण वस्तु की बात करना कठिन होता है। वास्तव में, हम सिद्धता या सम्पूर्णता से थोड़ा-बहुत परेशान हो जाते हैं। सम्पूर्णता के विषय में पूरी बातचीत में, हम अपनी त्रुटियों को बड़े कष्टदायक ढंग से जानते हैं। कितनी बार हमने किसी की बातों, कार्यों या उद्देश्यों से किसी दूसरे को यह कहते हुए सुना होगा, ''मैं तो *दूध का धुला* नहीं हूं, पर ...''?

''सद्गुण'' वाला होने की बात पर, हम सभी की त्रुटियां दिखाई देती हैं। यह बात हर किसी के लिए सच है। पूरे इतिहास में सद्गुण बनने की बात एक बड़ा दिलचस्प विषय रही है। चौथी शताब्दी ई. पू. के यूनानी लोग बुद्धि, साहस, धैर्य तथा न्याय को चार शारीरिक गुण मानते थे।[1] मसीही काल के मध्य युग के दौरान विद्वानों ने ऊपर लिखित चार गुणों को ''स्वाभाविक'' माना परन्तु विश्वास, आशा और *प्रेम* को ''धर्मशास्त्रीय'' गुण माना जाता था।

सद्गुणी होने की व्याख्या करने में बाइबल कहीं अधिक व्यापक है। हम दाऊद की वेदनापूर्ण पुकार से इसका सम्बन्ध जोड़ सकते हैं: ''हे परमेश्वर, मुझ में एक शुद्ध मन बना दे...।'' हम पतरस के शब्दों को सुन सकते हैं जब वह ''यीशु के पांवों पर गिरा, और कहा; हे प्रभु, मेरे पास से जा, क्योंकि मैं पापी मनुष्य हूं'' (लूका 5:8)। ध्यान दें कि नये नियम की दो मुख्य सूचियों में जहां मसीही गुणों पर ज़ोर दिया गया है वहां सद्गुण तथा *प्रेम* का सम्बन्ध कितना गहरा है:

> निदान, हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें *सुहावनी* [*prosphiles*] हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सद्‌गुण [*arete* = virtue, नैतिक श्रेष्ठता] और प्रशंसा की बातें हैं उन्हीं पर ध्यान लगाया करो (फिलिप्पियों 4:8)।

> और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्‌गुण [*arete* = virtue, नैतिक श्रेष्ठता], और सद्‌गुण [*arete* = virtue, नैतिक श्रेष्ठता] पर समझ और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति [*philadelphia*], और भाईचारे की प्रीति [*philadelphia*] पर *प्रेम* [*agape*] बढ़ाते जाओ (2 पतरस 1:5-7)।

सदाचार व प्रेम को साथ-साथ रखकर हमें उस महान तथा भली संगति में शामिल होना है। मसीही होने के नाते हमारे सामने यह एक चुनौती की तरह है।

अपर्याप्तता की हमारी सामान्य भावना दो कारणों से होती है। पहला, हम ऐसे संसार में रहते हैं जिसके, अधिकतर भाग में, ''प्रेम'' शब्द के अर्थ का ज्ञान नहीं रहा है। हमारी भाषा हमारे साथ विश्वासघात करती है क्योंकि अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए हम इस प्रकार के वाक्यों का प्रयोग करते हैं: ''मुझे आइसक्रीम अच्छी लगती है''; ''मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूं''; ''मैं तुम से प्रेम करता हूं कि तुम्हारे बिना रह नहीं सकता''; ''मुझे ऊपर की अदृश्य बातों की कहानी बताना अच्छा लगता है''; ''मुझे अपनी गाड़ी से प्रेम है।'' दूसरा, वस्तुओं तथा लोगों से ''प्रेम'' में अपने सम्बन्ध की समझ की कमी के कारण, हम परमेश्वर के प्रेम से हक्के-बक्के रह जाते हैं। यह भेद तो सचमुच बहुत बड़ा है ही, परन्तु मानवीय स्तर पर प्रेम के अर्थ को भूलकर हम उसे परमेश्वर के ''स्तर'' पर समझने की आशा कैसे रख सकते हैं?

आशा देकर निराश करने वाले इस प्रश्न का पूरा ज्ञान पाने का मार्ग है, क्योंकि पौलुस ने प्रार्थना की:

> ... कि *तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर* सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है और *मसीह के उस प्रेम* को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ (इफिसियों 3:17ख-19)।

इसमें तीन बातें हमारे करने के लिए हैं: प्रार्थना, वचन का अध्ययन तथा कर्म करना। परमेश्वर के वचन की कोई भी खोज जो हमें प्रार्थना में घुटनों तक नहीं ले जाती, अन्त में असफल ही होगी। सफलतापूर्वक खोज के लिए विनम्र तथा खोजपूर्ण प्रार्थना आवश्यक है।

परन्तु, प्रार्थना ही काफी नहीं है।

परमेश्वर के प्रेम को अच्छी तरह समझने के लिए हमें उसके वचन का अध्ययन करना आवश्यक है। उसका वचन हमारी शिक्षा के लिए दिया गया है (रोमियों 15:4) और परमेश्वर के मार्ग को जानने के लिए हमारे लिए इसका अध्ययन करना आवश्यक है (2 तीमुथियुस 3:15)। हम पहले ही परमेश्वर की नैतिक श्रेष्ठता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता तथा सर्वशक्तिशालिता पर ज़ोर दे चुके हैं। परमेश्वर के इन सभी गुणों में हमने उसका अनन्त स्वभाव देखा था। परमेश्वर में प्रेम भी अनन्त है। परमेश्वर के लोगों द्वारा उसके प्रेम को अनन्त अर्थात अनादि अर्थात सदा तक रहने वाला कहा गया है (1 राजा 10:9; यिर्मयाह 31:3; रोमियों 8:35-39)।

परमेश्वर के प्रेम के अनन्त स्वभाव से एक प्रश्न उठता है कि मनुष्य को बनाने से पहले परमेश्वर किस से प्रेम करता था? समय से पूर्व अर्थात जिसमें हम अपने आपको पाते हैं, अनन्तकाल था और वहां परमेश्वर भी था (यशायाह 57:15)। हमारे सामने एक प्रासंगिक प्रश्न है और उसका उत्तर निर्णायक है। यह प्रश्न प्रासंगिक इसलिए है क्योंकि, इसका अर्थ अवश्य ही प्रेम की बात है। इसका उत्तर निर्णायक इसलिए है क्योंकि यह परमेश्वरत्व के व्यक्तियों को शामिल करता है। परमेश्वर का सिद्ध प्रेम सृष्टि से भी पहले था, इसलिए हम निष्कर्ष निकालते हैं कि यह प्रेम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच बिना किसी रोक-टोक के अपने आप संप्रेषण करता है। यीशु ने पिता से प्रार्थना करते हुए इस बात का यह कहकर संकेत दिया, ''तू ने जगत की उत्पत्ति से पहिले मुझ से प्रेम रखा'' (यूहन्ना 17:24ख)। फिर, सृष्टि से स्वतन्त्र, परमेश्वर पूरी तरह से अपने आप से संप्रेषण, अपने आप के प्रति पूर्ण समर्पण व पूर्ण प्रकटीकरण रखता है।

पूर्ण अर्थ में यह परमेश्वर का भयपूर्ण प्रेम है। पवित्र त्रिएक के संदर्भ के अन्दर ही सम्पूर्ण एकता, अनन्त शान्ति, शानदार स्वेच्छा, शान्त अपरिवर्तनीयता,[2] तथा पवित्र कृपा विद्यमान है। परमेश्वर का सिद्ध प्रेम यही है; उसके प्रेम की बात उसके अन्दर ही है।

उसका प्रेम आगे दिया जाता है

परमेश्वर अपने महान प्रेम को अपने तक ही सीमित नहीं रखता; बल्कि यह इसे आगे भी फैलाता है। अर्थात, उसके प्रेम का पात्र अपने आपसे बाहर भी हो सकता है। जैसे जीवित परमेश्वर हमें जीवन देता है और सिद्ध परमेश्वर हमें सच्चाई देता है, वैसे ही प्रेमी परमेश्वर हमें अपने आपको ही देता है! अपने लिए परमेश्वर के प्रेम के उंडेले जाने पर विचार करने पर हमें अहसास होता है कि हमें अपने साथियों में यह प्रेम नहीं मिलता है। हम परमेश्वर की भयदायक शक्ति, गहन ज्ञान तथा अन्तरंग उपस्थिति के बारे में विचार करके शान्ति पा सकते हैं क्योंकि हमें आश्वासन है कि ये सभी गुण उसकी पवित्रता, शुद्धता, नैतिकता तथा ''आचारों'' की छतरी के नीचे काम में लगे हुए हैं। इस अहसास से कि परमेश्वर प्रेम करने वाला है, हमें शान्ति मिल सकती है, क्योंकि परमेश्वर का प्रेम उसकी पवित्रता को दिखाता है।

यह जानकर कि हमें ऐसा प्रेमी परमेश्वर मिला है हम बहुत ही प्रभावित और सच्चे मन से उसका धन्यवाद करते हैं। परन्तु हमारे लिए उसके प्रेम तथा उसके प्रति हमारे प्रेम में इतने बड़े अन्तर से हम अभी भी उलझन में हो सकते हैं। हम उसके प्रेम के बारे में वैसे ही अनुभव कर सकते हैं जैसे यीशु के चेलों ने प्रार्थना के बारे में किया था। एक अवसर पर यीशु द्वारा प्रार्थना समाप्त करने पर, उसके एक चेले ने बिनती की, ''हे प्रभु, हमें प्रार्थना करनी सिखा दे'' (लूका 11:1ख)। परमेश्वर के प्रेम को पाने के लिए आपको सांसारिक सोच से बाहर निकलना पड़ेगा। यदि हम प्रेम के उसके नये सम्बन्ध की चेष्टाओं को पाना चाहते हैं, तो हमें *परमेश्वर* के साथ अपने मन जोड़ने पड़ेंगे।

पहले, हमें यह अहसास करना पड़ेगा कि ''मसीही अर्थ के अनुसार, प्रेम का अर्थ भावना नहीं है। प्रेम का अर्थ भावनाएं नहीं बल्कि इच्छा है: ...''[3] हो सकता है कि ऐसे समाज में बड़ा होने के बाद जहां प्रेम का सम्बन्ध कामुकता से जोड़ा जाता है, यह बात हमें चौंकाने वाली लगे। जो समाज यह माने कि प्रेम 90 प्रतिशत सैक्स हो सकता है वह परमेश्वर के प्रेम को समझने या उसके महत्व को जानने से बहुत दूर है। नये नियम में *इरोस* (अर्थात कामोत्तेजना) शब्द तो नहीं मिलता, परन्तु शारीरिक पाप के खतरों पर ज़ोर दिया गया है (मत्ती 5:27, 29; 1 कुरिन्थियों 6:18-20)।

निश्चय ही, परमेश्वर की ओर से स्वीकृत प्रेम उससे ऊपर के स्तर में व्यक्त किया जाना चाहिए। विवाह का संस्थान मनुष्य जाति को आगे बढ़ाने और कामुक प्रेम सम्बन्ध देने के लिए परमेश्वर का निर्धारित ढंग है। परमेश्वर की योजना के अनुसार चल रहे विवाह को उसकी ओर से इतना अधिक सम्मान दिया जाता है कि इसकी तुलना मसीह तथा उसकी कलीसिया के सम्बन्ध से की जाती है (इफिसियों 5:22-33)।

प्रेम को व्यक्त करने का एक और सुन्दर ढंग मित्रता है। यीशु ने कहा था, ''इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे'' (यूहन्ना 15:13)। नये नियम में दर्जनों बार संज्ञा *फिलोस* का उपयोग प्राय: मित्रता का संकेत देता है (यूहन्ना 11:11; लूका 12:4)। क्रिया *फिलियो* का भी पवित्र शास्त्र में बार-बार उपयोग मित्रों के लिए प्रेम (यूहन्ना 11:3), यीशु के लिए प्रेम (यूहन्ना 11:15ख), तथा माता-पिता के प्रेम (मत्ती 10:37) को दिखाता है।

उसका प्रेम दिखाया गया

सबसे बड़ा प्रेम हमारे परमेश्वर के द्वारा, वही दिखाया गया है जो प्रेम *है* (1 यूहन्ना 4:8)। नये नियम में *अगापाओ* शब्द का सैकड़ों बार इस्तेमाल हुआ है। यह प्रेम जीवन की सबसे ऊंची भूमि की मांग करता है। यह स्वर्ग से मिलता है और इसे हमें वहां ले जाने के लिए बनाया गया है। यह कोई कल्पना नहीं है। यह मात्र प्रभाव नहीं है। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम जीवन अर्थात जीवित गुण है।

इतिहास में उस प्रेम का सबसे बड़ा प्रदर्शन परमेश्वर की सबसे बड़ी प्रेम भेंट है अर्थात यीशु मसीह जो उसका पुत्र है। यह सब कुछ दे देने वाला *अगापे* प्रेम था। ''क्योंकि परमेश्वर

ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' (यूहन्ना 3:16)। यीशु का यह बलिदान न केवल हमें पिता के उस प्रेम को दिखाता है जो वह हम से करता है, बल्कि पिता के लिए पुत्र के प्रेम को भी दिखाता है। गतसमनी में यीशु ने बहुत दुखी होकर प्रार्थना की थी कि पिता की इच्छा पूरी हो; उसने अपने आपको अपनी इच्छा से सौंप दिया। संसार में प्रेम का सबसे बड़ा माप अर्थात यीशु मसीह हमारे प्रभु के द्वारा पिता की इच्छा के लिए अपनी इच्छा से स्वयं को दे देना है।

> जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। और परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञाएं कठिन नहीं (1 यूहन्ना 5:2, 3)।

पाद टिप्पणियां

[1]प्लैटो *द रिपब्लिक* 427ई-29बी। [2]''अपरिवर्तनीयता'' परमेश्वर के न बदलने वाले स्वभाव के लिए इस्तेमाल किया गया है। [3]सी. एस. लुइस, *मीयर क्रिश्चियेनिटी* (न्यूयार्क: मैक्मिलन कं., 1960), 115.